श्री नंगली तीर्थ

कर लै गुरु मंदिर दा दर्शन संगते रज– रज के ।
प्रीतम बैठा इसदे अंदर मुखड़ा कज – कज के।। टेक।।

प्रीतम दे दर दी ख़ाक, करदी जन्म मरण तों पाक।
मेरे सत्गुरु दा है वाक्, मैं कहन्दा गज वज के, कर लै ... ...

दर्शन करके मिले सरूर, भज्जन पाप दूर तों दूर।
बैठे अंदर आप हुजूर, देखो सज धज के, कर लै ... ...

सत्गुरु दोनों जग दा वाली , करदा भगतां दी रखवाली।
खाली मूल न जावे सवाली ,औन्दे भज– भज के , कर लै ... .

"दासनदास " करे क्या ब्यान, महिमा गांदे वेद पुराण।
मैं हां ऐसे दर दा स्वान, आया जग नूं तज के , कर लै ... ...

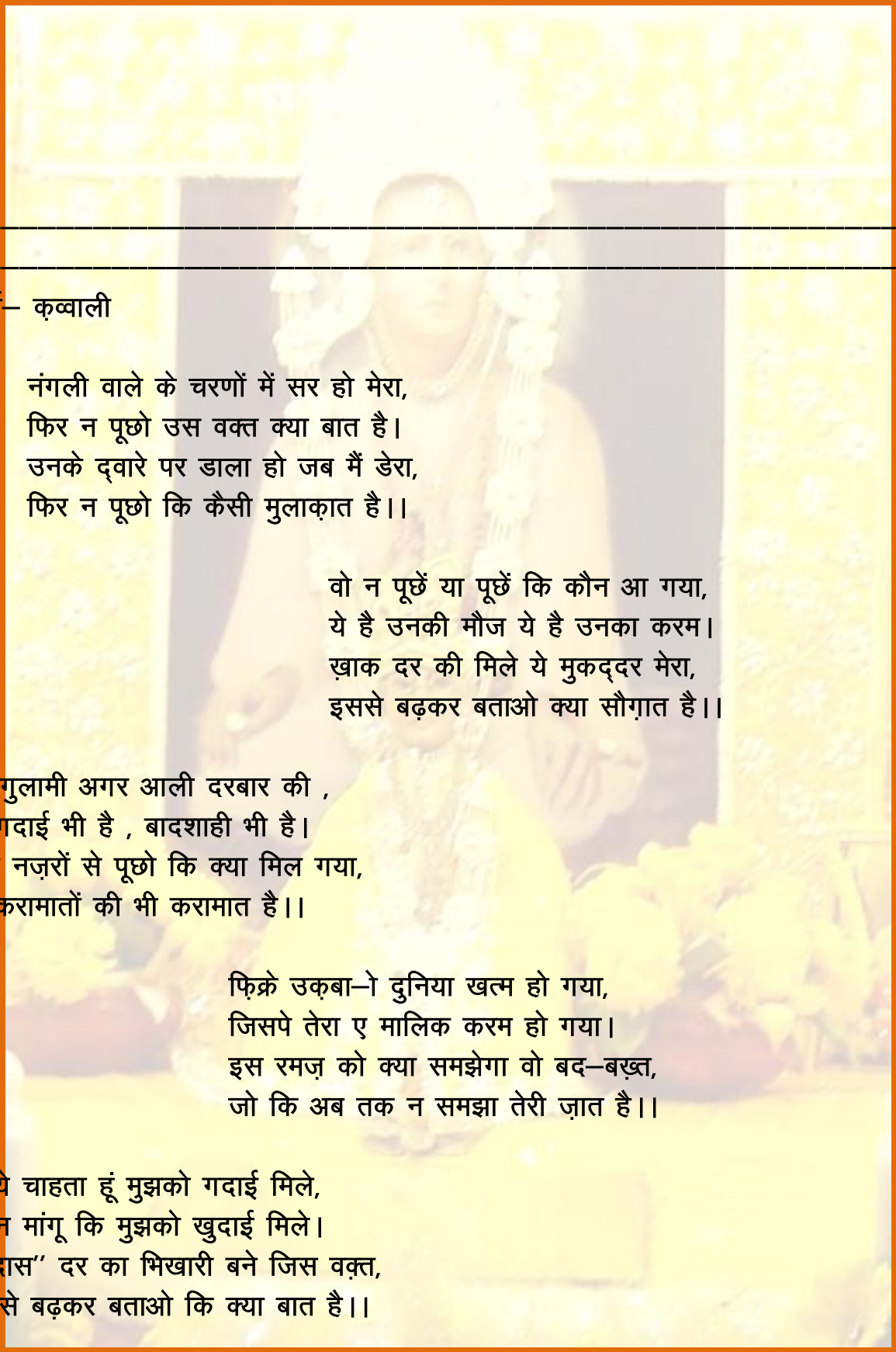

तर्ज़– क़व्वाली

नंगली वाले के चरणों में सर हो मेरा,
फिर न पूछो उस वक्त क्या बात है।
उनके द्वारे पर डाला हो जब मैं डेरा,
फिर न पूछो कि कैसी मुलाक़ात है।।

वो न पूछें या पूछें कि कौन आ गया,
ये है उनकी मौज ये है उनका करम।
ख़ाक दर की मिले ये मुकद्दर मेरा,
इससे बढ़कर बताओ क्या सौग़ात है।।

हो गुलामी अगर आली दरबार की ,
ये गदाई भी है , बादशाही भी है।
मेरी नज़रों से पूछो कि क्या मिल गया,
ये करामातों की भी करामात है।।

फ़िक्रे उक़बा–ो दुनिया खत्म हो गया,
जिसपे तेरा ए मालिक करम हो गया।
इस रमज़ को क्या समझेगा वो बद–बख़्त,
जो कि अब तक न समझा तेरी ज़ात है।।

मैं ये चाहता हूं मुझको गदाई मिले,
ये न मांगू कि मुझको खुदाई मिले।
" दास" दर का भिखारी बने जिस वक़्त,
इससे बढ़कर बताओ कि क्या बात है।।

तर्ज़– ओ मथुरा को जाने वाले ... ...

नंगली को जाने वाले इक अर्ज सुनते जाना ।
मेरे पिया को जाके मेरा दर्द सुनाना ।। टेक।।

कहना कि इक भिखारी बैठा तड़प रहा है।
कब तक मिलेगा उसको चरणों में आ ठिकाना।।

चरणों में सीस धरना और सर्द आहें भरना।
पूछें तो चुपके से तुम आँसू ही दो गिराना ।।

मेरी कहानी सुनकर हँसेंगे दिल ही दिल में ।
और पूछेंगे यह तुमको रहता है कहां दिवाना।।

कहना कि दर – ब– दर है, हर वक्त चश्में तर है।
चाहता तेरी नज़र है कहे "दास" यह बताना।।

तर्ज़– नगरी– नगरी ... ...

लिख – लिख पत्तियाँ दिल की बत्तियाँ नंगली में भिजवाऊं मैं।
तुझ बिन कौन सुनेगा मेरी किसके द्वारे जाऊं मैं।। टेक।।

छोड़ के चोरी माखन की क्यों दिल की चोरी करते हो।
विरहन की पुकारों का कुछ ध्यान न दिल में धरते हो।।
पाती आवे कब प्रीतम की हरदम काग उड़ाऊं मैं , लिख ... ...

तेरे कारण ऐ मन मोहन मंदिर एक सजाया है।
तेरी कृपा से सब इसका कूड़ा फैंक गिराया है।।
आंसू चार छिड़क कर इसमें झाड़ू रोज़ लगाऊं मैं , लिख ... ...

इस मंदिर में आकर प्रीतम एक बार प्रकाश करो ।
घट– घट वासी सर्व निवारी मुझको न उदास करो।।
सूना मंदिर देख प्रभु रो– रो कर घबराऊं मैं , लिख ... ...

आंख लगाए सेज बिछाए , कब से आंखे तरस रहीं।
न आये न पाती भेजी नैन बूंद जल बरस रहीं।।
भली बुरी अब जो कुछ भी हूं तेरी 'दास' कहाऊं मैं ,लिख ... ...

तर्ज़– न जावी शामां वे ... ...

चलो रल मिल चलिए जी, सत्गुरु दा द्वारा जा मलिए।।टेक।।

नंगली मंदिर अंदर प्रीतम साथों करदा ओहले।
अपनी भेंट जो आप चढ़ावे, उस नाल सोहना बोले।।
जे ख़ाकू रलिए जी, सत्गुरु ... ...

ख़ाक मिले जे इसदे दर दी, समझो अमृत मूरी।
अपने प्रेमी प्यारे दी प्रभु आशा करदे पूरी।।
धूरी तन ते मलिए जी, सत्गुरु ... ...

बन के मस्त मलंग गुरां दे, उठदे बैठदे सुत्ते।
दर दे चौकीदार कहाईये, बन के उसदे कुत्ते।।
ओत्थों मूल न हलिए जी, सत्गुरु ... ...

छड़ के झूठे जग दी आशा , " दासनदास" कहाईये।
देख गुरां दी मोहनी मूरत , खुद मूरत हो जाईये।।
इस प्रण तो न टलिए जी, सत्गुरु ... ...